आधुनिक साहित्य में नारी चेतना

अरविन्द कुमार गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर(भाषा विज्ञान संकाय)
टी जान कालेज, बैंगलोर

सार-
प्राचीन काल से ही भारतीय नारी ने पुरुष का कंधे से कंधा मिलाकर सदैव साथ दिया है बल्कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में भी बहुमूल्य योगदान दिया है । विदुषी महिला गार्गी, विद्योत्तमा, रानी लक्ष्मीबाई , सरोजिनी नायडू, श्रीमति विजय लक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नायडू, श्रीमति इंदिरा गांधी, कल्पना चावला , साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा, मेरिकोम या साक्षी इन सभी ने अपने-अपने क्षेत्रों अपनी प्रतिभा के बल पर नारी जाति को विशेष स्थान दिलाया है ।
साहित्य रचना भी इससे अछूती नहीं है । उपन्यासों या कहानियों अथवा नाटक महादेवी वर्मा , मन्नू भंडारी , ममता कालिया, सुधा मूर्ति, महाश्वेता देवी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग आदि जाने-पहचाने नाम आधुनिक साहित्य के प्रमुख स्तम्भों में हैं ।
नारी की संवेदनाओं को शायद नारी ही ज़्यादा अच्छी तरह से समझ सकती है इसीलिए इन महिला साहित्यकारों ने नारी की वेदनाओं और उसकी सामाजिक स्थिति का जितना सजीव चित्रण किया है उतना पुरुष साहित्यकार न कर पाए हों । नारी लेखन के बारे में प्रसिद्ध व्याख्याता **एल्विन वो वोल्टर** ने अपनी पुस्तक "**द न्यू फेमिनिस्ट क्रिटिसिज़्म**" में लिखा है- सदियों से नारी अंधकार में रही है । वे आपस में नहीं जानती । जब नारियाँ लिखती हैं तो इसी अंधेरे का अनुवाद करती है ।

सहायक शब्द-
व्याखाता , साहित्य रचना , महिला साहित्यकारों , बहुमूल्य योगदान , आधुनिक साहित्य के प्रमुख स्तम्भों

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी ।
आँचल में है दूध और आँखों में है पानी ॥

---मैथिलीशरण गुप्त

हमारे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण जी की यह पंक्तियाँ भारतीय नारी की वास्तविक स्थिति का सटीक चित्रण करती हैं ।
हमारे धर्म ग्रंथों में उल्लेख है कि "**यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवता ।**"
लेकिन पुरुष प्रधान समाज नारी सदैव गौण ही रही है । प्राचीन काल से ही भारतीय नारी ने पुरुष का कंधे से कंधा मिलाकर सदैव साथ दिया है बल्कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में भी बहुमूल्य योगदान दिया है । विदुषी महिला गार्गी, विद्योत्तमा, रानी लक्ष्मीबाई , सरोजिनी नायडू, श्रीमति विजय लक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नायडू, श्रीमति इंदिरा गांधी, कल्पना चावला , साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा, मेरिकोम या साक्षी इन सभी ने अपने-अपने क्षेत्रों अपनी प्रतिभा के बल पर नारी जाति को विशेष स्थान दिलाया है ।

साहित्य रचना भी इससे अछूती नहीं है । उपन्यासों या कहानियों अथवा नाटक महादेवी वर्मा , मन्नू भंडारी , ममता कालिया, सुधा मूर्ति, महाश्वेता देवी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग आदि जाने-पहचाने नाम आधुनिक साहित्य के प्रमुख स्तम्भों में हैं ।

नारी की संवेदनाओं को शायद नारी ही ज़्यादा अच्छी तरह से समझ सकती है इसीलिए इन महिला साहित्यकारों ने नारी की वेदनाओं और उसकी सामाजिक स्थिति का जितना सजीव चित्रण किया है उतना पुरुष साहित्यकार न कर पाए हों । नारी लेखन के बारे में प्रसिद्ध व्याख्याता **एल्विन वो वोल्टर** ने अपनी पुस्तक "**द न्यू फेमिनिस्ट क्रिटिसिज़्म**" में लिखा है- सदियों से नारी अंधकार में रही है । वे आपस में नहीं जानती । जब नारियाँ लिखती हैं तो इसी अंधेरे का अनुवाद करती हैं ।

महादेवी वर्मा ने "**श्रंखला की कड़ियाँ**" नामक रेखाचित्र में स्त्री की हालत के बारे में कहा है – "नारी के इतिहास का सूक्ष्म आंकलन करें तो पता चलेगा कि महापाषाण काल से स्फुटनिक युग तक नारी नर के जीवन का पोषण एवं उन्नयन करती आ रही है लेकिन देवी कहकर पुरुष ने उसे अपने अधिकारों से वंचित किया है । उसे पाषाणी प्रतिमा बना दिया और उसके मानवी जीवन को भी नकार दिया । केवल देना ही देना और सहना ही सहना उसके हिस्से में रह गया है और समर्पण उसके भाग्य में कील –सा गढ़ गया।"

पुरुष प्रधान समाज में नारी सदैव उपेक्षित रही है । समय बदल रहा है नारी घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर अपनी शिक्षा, अपनी काबिलियत, अपनी योग्यता का योगदान समाज में विभिन्न रूपों में दे रही है और जब समानता की बात आती है तो पुरुष प्रधान समाज में पुरुष को, उसके अहम को, उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है । वह चाहते हुए भी स्त्री की समानता को मन से स्वीकार नहीं कर पाता और यही हमारे समाज में पारिवारिक विघटन का कारण बन जाता है ।

हमारे धर्म-ग्रंथों में **शिव और शक्ति** के रूप को एकाकार **अर्धनारीश्वर** का रूप भी माना गया है । मेरा मानना है कि शिव और शक्ति की समानता या तुलना नहीं की जा सकती । वे एक-दूसरे के पूरक हैं और एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं । इसी प्रकार भारतीय समाज में स्त्री व पुरुष एक-दूसरे के **पूरक** हैं ।वे एक-दूसरे के बिना **अधूरे** हैं । उनकी आपस में समानता या तुलना का कोई औचित्य ही नहीं है ।

नारी साहित्यकारों ने नारी चेतना के बारे में अपनी लेखनी से समाज में जाग्रति उत्पन्न की है । उनकी रचनाओं की नारी शिक्षित है, समझदार है तथा परिस्थितियों का सामना करने में प्रयत्नरत है । यदि हम **सुधा मूर्ति** के उपन्यास "**महाश्वेता**" की बात करें तो इसमें नारी पात्र के रूप में अनुपमा का विवाह धनवान आनंद से होता है । वास्तव में आनंद एक नाटक मंचन के दौरान अनुपमा से मिलता है और अनुपमा की सुंदरता एवं उसके गुणों पर मोहित हो जाता है और डा० होते हुए भी निर्धन अनुपमा से विवाह करता है जिसके लिए आनंद की माता अनिच्छा पूर्वक सहमति देती हैं । आनंद विवाह के पश्चात उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड चला जाता है । इधर अनुपमा को कुष्ठ रोग हो जाता है जिसके कारण उसे आनंद का परिवार नकार देता है और अनुपमा को वापस उसके माता-पिता घर भिज देते हैं । अनुपमा के पिता गरीब अध्यापक, हैं उसके कुष्ठ रोग के कारण उसकी छोटी बहन का रिश्ता टूट जाता है । अनुपमा आनंद को पत्र लिखती है लेकिन सामाजिक दबाव के कारण आनंद भी उसको नकार देता है ।इससे अनुपमा बहुत दुखी होती है । एक बार आत्म हत्या का मन बनाती है लेकिन फिर हिम्मत जुटाकर परिस्थितियों का सामना करने का निर्णय लेती है और अपनी एक सहेली के पास मुंबई आ जाती है । नौकरी तलाशते हुए वह एक कालेज में नाट्य अध्यापिका के रूप में कार्य करने लगती है ।इधर आनंद को अपनी गलती का एहसास होता है और वह अनुपमा को घर वापस चलने का आग्रह करता है लेकिन आनंद के पास अनुपमा के प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं होता है । वह जीवन में पीछे लौटने को मना कर देती है ।

सुधा मूर्ति जी ने अनुपमा के रूप में आधुनिक नारी की चेतना का अत्यंत सजीव चित्रण किया है ।आनंद जो अनुपमा का दीवाना था, पति होते हुए भी ऐसे समय में उससे

किनारा कर लेता है जब अनुपमा को उसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है । अनुपमा के अपने परिवार में उसके कुष्ठ रोग के कारण उसकी सौतेली माँ उसको स्वीकार नहीं करती है । इन असहाय परिस्थितियों में वह हिम्मत नहीं हारती और अकेले ही समाज की हर परिस्थिति का सामना करते हुए आर्थिक व सामाजिक रूप से स्वाबलंबी बनती है ।

यदि हम मन्नू भंडारी जी की रचनाओं की बात करें तो उन्होंने अपनी रचनाओं में समाज की मध्यम वर्गीय नारियों की चेतना को अपनी कलम से अंकित किया है । उन्होंने स्वयं सामाजिक परंपराओं का विरोध करते हुए लेखक राजेंद्र यादव जी से विवाह किया । श्री राजेंद्र यादव जी ने "**मेरा हमदम मेरा दोस्त**" में लिखा है कि औरों की तरह यह घर और मेज़-कुर्सी ला जुटाने के लिए हम लोग साथ नहीं आए थे । लिखना और अधिक अच्छा लिखने का वातावरण बनाने का विश्वास ही हमें निकट लाया था। कुल मिलाकर मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व के पहचान के बारे में उन्होंने स्वयं कहा है--- माँ, बेटी, बहन, पत्नी, सास, बहू, गृहस्वामिनी, दासी, प्रेमिका आदि भूमिकाएँ स्त्री जीवन का अविच्छिन्न अंग बन जाती हैं, इसके साथ लेखिका, अध्यापिका प्रतिष्ठित महिला का भी । इन सबमें मैं दर असल क्या हूँ ? तो यों समझिए कि इन सबका मिला-जुला रूप ही मेरा व्यक्तित्व है और मैं वही बनी भी रहना चाहती हूँ।"

उनकी रचनाओं में पाँच उपन्यास, लगभग पाँच कहानी संग्रह हैं, इसके अतिरिक्त उन्होंने नाट्य रचनाएँ भी लिखी हैं जिनका सफल मंचन हो चुका है । उन्हें लेखन के लिए विभिन्न पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं जिनमें भारतेंदु हरिश्चंद पुरस्कार, पीपुल्स पुरस्कार तथा सन्२००८ में मिला व्यास सम्मान प्रमुख हैं । उनकी कहानियों रजनीगंधा, आकाश के आईने में, स्वामी पर फिल्में भी बन चुकी हैं । रजनीगंधा को फिल्म क्रिटिक पुरस्कार और पब्लिक पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है ।

उनके कथा साहित्य में नारी का चित्रण पुरुष की आकांक्षाओं से प्रेरित होकर लिया गया है । मन्नू जी लिखा है कि--- "लेखकों ने या तो नारी की मूर्ति को अपनी कुंठाओं के अनुसार विकृतियों से तोड़-मरोड़ दिया है या अपनी स्वप्न नारी की तस्वीर उतारी है ।------ - वह देवी और दानवी के दो छोरों के बीच टकराती पहेली नहीं , हाड़-मांस की मानवी भी है । उसे प्रायः सभी एक सिरे से नज़र अंदाज़ करते रहे हैं।"

मन्नू जी ने इसके विरोध में अपनी कलम चलाई है । वे नारी के आँचल को दूध और उसकी आँखों में आँसुओं के चित्रण में विश्वास नहीं रखती । वे नारी के जीवन के यथार्थ को उसी की दृष्टि से जीवन की वास्तविकता के धरातल पर प्रस्तुत करने में सक्षम हुईं हैं जिसके कारण उनकी कहानियाँ सजीव होकर जन-सामान्य से बातें करने लगती हैं । लेखन उनका व्यवसाय नहीं है बल्कि अनुभूति और चिंतन की अभिव्यक्ति है ।

मन्नू जी मूल रूप से नारी जीवन की कहानीकार हैं । नारी जीवन व्यर्थ और सूना लगता है । उन्होंने आधुनिक नारी को घर की चार-दीवारी से बाहर निकालकर कर्म क्षेत्र में लाकर खड़ा कर दिया है । यहाँ परिस्थितियों का दबाव भी है और मुक्ति का उल्लास भी ।वे स्वयं कामकाजी नारी थीं । अतः उन्होंने अपने ही कार्य क्षेत्र से अधिकांश कथा पात्रों को चुना है ।उनके सभी नारी पात्र युवा अवस्था के हैं, शिक्षित हैं, कामकाजी हैं जो स्त्रियाँ काम नहीं करतीं पूर्ण रूप से गृहस्थ धर्म निभाती हैं, वे भी मुख्य रूप शिक्षित हैं और अपने व्यक्तित्व की पहचान के लिए संघर्ष करती हैं ।

संयुक्त परिवार भारतीय समाज का मूल आधार रहा है लेकिन अब आर्थिक मानसिकता रूपी जीवन मूल्यों के कारण पारिवारिक रिश्तों में तनाव आ गया है । "**आपका बंटी**" उपन्यास में लेखिका ने शकुन के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया है कि नारी पहले मात्र शरीर थी अब तो वह अर्थ भी है उसकी अर्जित संपत्ति पति और परिवार की है परंतु उसका विकसित होता व्यक्तित्व तनाव का कारण है । उसका व्यक्तित्व ,उसकी चेतना , उसके निर्णय किसी को स्वीकृत नहीं हैं इसलिए अब परिवार टूटने लगे हैं । आज की नारी का

आंतरिक संकट पुरुष के साथ बनते-बिगड़ते संबंधों को लेकर उपन्यास में प्रकट हुए हैं ।उन्होंने "**एक इंच मुस्कान**" उपन्यास में अम्ला को प्रतिक्रियावादी नारी के रूप में चित्रित किया है ।

स्वतंत्रता के बाद स्त्री और सैद्धांतिक रूप से आधुनिकता के पोषक दिखाई देते हैं किंतु व्यावहारिक रूप में वे अपनी परंपराओं से जुड़े रहते हैं । आधुनिक जीवन की आर्थिक समस्या पुरुष के साथ-साथ नारी को भी आर्थिक उपार्जन में सहयोग देने के लिए घर से बाहर व्यस्त रहना पड़ता है । ऐसी स्थिति में उसकी आर्थिक क्षमताओं का लाभ परिवार प्रसन्नता पूर्वक उठाता है किंतु परंपरागत रूप में एक माँ, पत्नी, बहू, भाभी, बेटी आदि का दायित्व निभाने की सभी आशा भी रखते हैं ।

स्त्री के जीवन के तीन प्रमुख रूपों का वर्णन **सुधीर काकर** ने **नारी के व्यक्तित्व की पहचान** नामक लेख में इस प्रकार प्रस्तुत किया है----- पहले वह माँ-बाप की बेटी है, दूसरे रूप में वह अपने पति की पत्नी है (उसके माँ-बाप की बहू) फिर तीसरे रूप में वह अपने बच्चों की माँ है ।

उपार्जन के लिए स्त्री घर की चार दीवारी से बाहर निकलने की प्रक्रिया पारिवारिक अंबंधों को बदल रही है । कामकाजी होने पर पर भी आर्थिक दृष्टि से नारी पूर्ण रूप से स्वतंत्र नहीं है । परिवार की आर्थिक परिस्थितियाँ नारियों को नौकरी करने के लिए बाध्य करती हैं । भारतीय "**कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ**" में महिलाओं की समस्याओं का वर्णन करते हुए कहा गया है --- उसको सब कुछ अपने-आप संभालना चाहिए,उसकी मेहनत की कमाई को सबके लिए खर्च करना है । इसके बावजूद रोज उसका उत्तरदायित्व बढ़ रहा है । सबका निर्वाह करने पर भी वह अपने लिए एक कौड़ी भी नहीं रख पाती इसीलिए नारी पहले की अपेक्षा स्वतंत्र होकर भी संतुष्ट नहीं है ।

दुविधा में पड़ी "**स्वामी**" कहानी की स्वामिनी सास और ननद के द्वारा होने वाले अन्याय के प्रति आवाज़ उठाना चाहती है लेकिन उनसे कहने की बजाय पति से ही संयम के साथ कहती है---- "यहाँ कदम-कदम पर जिस तरह का अन्याय होता है उसमें चुप रहना मेरे लिए संभव नहीं । न हो तो तुम मुझे माँ के यहाँ भेज दो।"

आज के नारी और पुरुष दोनों ही आधुनिक परिवेश में फैले मानवीय दुख , अवसाद, भयानकता, अकेलापन,टूटल आदि वृत्ति के शिकार हुए हैं । कुंठा, संत्रास और घुटन आज के मनुष्य की सबसे बड़ी नियति है यही आधुनिक नारी की ज्वलंत समस्या है ।

मन्नू जी ने अपनी रचनाओं में नारी जीवन के लगभग हर पहलू को छुआ है । उन्होंने एक अलग परिपेक्ष्य में एक स्त्री के व्यक्तित्व को उभारा है । वह प्रेम को लेकर भवुक नहीं है । विवाह और प्रेम को वह दो स्तरों पर रखकर देख सकती है और विवाह के लिए प्रेम का परित्याग भी कर सकती है । वह यह सोचकर निर्णय करती है कि ज़िंदगी को केवल भावुकता के आधार पर हीं नहीं देखना चाहिए । प्रणय के अलावा भी नारी के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं जिनसे लड़ना ही जीवन की सार्थकता मानना चाहिए । आज की नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व की पहचान यहाँ स्पष्ट होती है ।

संदर्भ-

महाश्वेता- सुधा मूर्ति
मन्नू भंडारी का रचना संसार- डा० षीना ईप्पन